



पितृ दोष व निवारण

पितृ-भाव, सूर्य की स्थिति, संकेत व तर्पण-उपाय

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:02

॥ पारस वाणी ॥

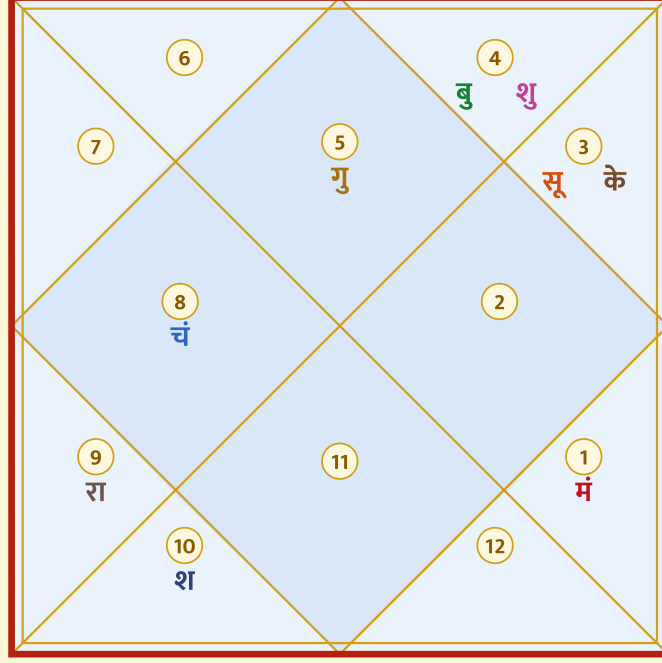
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) • लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



आपकी कुंडली में पितृ दोष — है या नहीं

अ ध्या य 1

आपकी कुंडली में पितृ दोष — है या नहीं

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली को ध्यान से देखने के बाद यह कहना ज़रूरी है — **आपकी कुंडली में पितृ दोष का केवल एक हल्का संकेत है, कोई गंभीर दोष नहीं।** यह बात राहत देने वाली है और आपको किसी भी प्रकार की चिंता करने की ज़रूरत नहीं।

पितृ दोष क्या होता है और कैसे देखते हैं

सरल शब्दों में — पितृ दोष तब माना जाता है जब सूर्य (जो पिता व पूर्वजों का कारक ग्रह है) राहु या केतु के साथ हो, या नवम भाव (भाग्य व पिता का घर) पर पाप ग्रहों का दबाव हो। यह दोष यह नहीं कहता कि पूर्वज नाराज़ हैं — बस यह संकेत देता है कि पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व स्मरण का भाव और अधिक जाग्रत किया जाए।

आपकी कुंडली में क्या मिला

आपके ग्यारहवें भाव (मिथुन राशि) में **सूर्य और केतु एक साथ बैठे हैं।** यही एकमात्र संकेत है। सूर्य पिता के कारक हैं और केतु एक छाया ग्रह — इनकी युति को "सूर्य-ग्रहण दोष" भी कहते हैं, जो कुंडली के योग-खाते में भी दर्ज है।

यह दोष ग्यारहवें भाव में है — पिता-सम्बन्धी नवम भाव में नहीं। इसलिए यह दोष अपने मूल स्थान पर नहीं, एक दूरस्थ भाव में है और इसका प्रभाव सीमित व हल्का रहता है।

इसके अतिरिक्त — **नवम भाव (मेष) में आपके नवमेश मंगल स्वराशि में बैठे हैं।** यह बड़ी शुभ बात है। नवम भाव जितना बलवान हो, पितृ-सम्बन्धी बाधाएँ उतनी कम होती हैं। आपका नवम भाव भाव-बल में भी ठीक-ठाक (9.99) है और मंगल की स्वराशि-स्थिति इसे और पुष्ट करती है।

केतु का सूर्य के साथ होने का वास्तविक अर्थ

केतु आध्यात्मिकता व वैराग्य का ग्रह है। जब यह सूर्य के साथ होता है, तो व्यक्ति के मन में पिता-सम्बन्ध को लेकर कभी-कभी एक

अजीब-सी दूरी या भावनात्मक उलझन रह सकती है — **प्रेम होते हुए भी पूरा खुलकर व्यक्त न हो पाना।** यह कोई पाप नहीं, बस एक प्रवृत्ति है जो थोड़े सजग प्रयास से सुधरती है। इसके साथ **आत्मविश्वास कभी-कभी डगमगाता** भी है — और इसी का उपाय सूर्य को बल देना है।

उपाय — सरल, सादे, आज से करने योग्य

आपकी कुंडली में सूर्य की अवस्था मृत है, इसलिए उन्हें बल देना और भी ज़रूरी है:

- **प्रतिदिन सूर्योदय के समय उठकर 10-15 मिनट धूप में बैठें** — यही सूर्य को जीवंत करने का सबसे सरल उपाय है
- **रविवार को जल में लाल फूल या गुड़ डालकर सूर्य को अर्घ्य दें**
- अमावस्या के दिन **कौवे, गाय और कुत्ते को रोटी दें** — यह पूर्वजों के स्मरण का परंपरागत व सादा तरीका है
- **पिता व बुजुर्गों के साथ समय बिताएँ** — यही सबसे बड़ा पितृ-तर्पण है जो कोई जीवित व्यक्ति कर सकता है

मुख्य बातें

- **पितृ दोष केवल एक हल्का संकेत** — सूर्य-केतु की युति ग्यारहवें भाव में; कोई गंभीर दोष नहीं
- **नवम भाव बलवान है** — मंगल स्वराशि में, पितृ-भाव पर किसी पाप ग्रह का दबाव नहीं
- **प्रभाव सीमित** — कभी-कभी आत्मविश्वास में कमी या पिता-सम्बंध में भावनात्मक दूरी
- सूर्य को बल देने वाले **सरल उपाय पर्याप्त हैं** — कोई बड़ा कर्मकांड आवश्यक नहीं
- **श्रद्धा व कृतज्ञता** — यही असली पितृ-तर्पण है; यह भाव मन में जागा रहे, बस इतना काफ़ी है



सूर्य, नवम भाव व मिले संकेत

अ ध्या य 2

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में पितृ दोष का जो एकमात्र संकेत मिला है — वह गंभीर नहीं, बल्कि हल्का है। आपके पूर्वजों का आशीर्वाद आपके साथ है, केवल एक छोटी-सी बात ध्यान माँगती है।

सूर्य कहाँ हैं और क्या कह रहे हैं

आपकी कुंडली में **सूर्य मिथुन राशि के ग्यारहवें भाव में विराजमान हैं।** सूर्य पिता के कारक ग्रह हैं — यह बात सभी शास्त्रों में एकमत से मानी गई है। ग्यारहवाँ भाव लाभ, मित्रता, इच्छापूर्ति और सामाजिक संबंधों का घर है। यहाँ सूर्य का होना यह बताता है कि **पिता व पूर्वजों से आपको सामाजिक मान, मित्र-नेटवर्क और जीवन में कुछ पाने की प्रेरणा मिली है।**

हालाँकि, इसी भाव में **केतु भी बैठे हैं** — और यही एकमात्र पितृ दोष का संकेत है। केतु का स्वभाव है विरक्ति, अलगाव और सांसारिक चीजों से कटा-कटा रहना। जब वे सूर्य के साथ होते हैं, तो **पिता के साथ के रिश्ते में कहीं एक दूरी या अधूरापन** महसूस हो सकता है — भावनात्मक नहीं समझ पाना, उनसे खुलकर बात न हो पाना, या उनके होते हुए भी उनकी छाँव थोड़ी कम लगना। यह कोई बड़ा दोष नहीं; यह बस एक संकेत है कि इस रिश्ते में थोड़ी और चेतना चाहिए।

नवम भाव — पिता, भाग्य और पितृ-ऊर्जा का असली घर

नवम भाव पिता का घर है और भाग्य का भी। आपकी कुंडली में नवम भाव मेष राशि का है, और इसके स्वामी **मंगल स्वयं इसी भाव में बैठे हैं — अपनी स्वराशि में।** यह अत्यंत शुभ स्थिति है। इसका अर्थ यह है कि **आपके भाग्य की नींव मज़बूत है, पूर्वजों की पुण्य-ऊर्जा आपके साथ काम कर रही है।**

नवमेश मंगल की यह स्थिति पितृ दोष को कमज़ोर करती है। जहाँ नवम भाव पीड़ित या निर्बल हो, वहाँ पितृ दोष गहरा असर करता है — यहाँ ऐसा नहीं है। **मंगल की अपने भाव में उपस्थिति यह कह रही है कि पितृ-आशीर्वाद की धारा आपके जीवन में बह रही है।**

गुरु की दृष्टि भी नवम भाव पर पड़ रही है — लग्न में बैठे गुरु सीधे नवम को देख रहे हैं। यह दृष्टि नवम भाव को और बल देती है, **भाग्य व पितृ-कृपा को पुष्ट करती है।**

सूर्य-केतु की युति — इसे समझें, डरें नहीं

सूर्य और केतु जब एक साथ होते हैं तो **"सूर्य-ग्रहण दोष"** बनता है — यह आपकी कुंडली में भी दिखाया गया है। इसका अर्थ है कि कभी-कभी **आत्मविश्वास में उतार-चढ़ाव** आ सकता है, या पिता के साथ किसी विषय पर मन की बात कहने में झिझक होती है। यह भावनात्मक खाई अक्सर जाने-अनजाने बन जाती है।

लेकिन यह दोष ग्यारहवें भाव में है — **दुःस्थान में नहीं।** इसलिए इसका असर जीवन की जड़ों तक नहीं पहुँचता। यह केवल यह कहता है कि पिता व पूर्वजों की स्मृति को सचेत रूप से जीवित रखें।

मुख्य बातें

- **पितृ दोष केवल एक हल्का संकेत** — सूर्य-केतु की युति ग्यारहवें भाव में; यह गंभीर नहीं।
- **नवम भाव बलवान है** — मंगल अपनी स्वराशि में, गुरु की दृष्टि भी — पूर्वजों का आशीर्वाद सक्रिय है।
- **पिता के साथ संवाद** में थोड़ा और खुलापन लाना, जो कहना हो वह कहना — यही इस दोष का सबसे सरल उपाय है।
- रविवार को सूर्य को जल दें और मन ही मन पिता व पितामह को स्मरण करें — यह छोटा-सा कार्य **सूर्य को बल देता है और केतु की**

विरक्ति को संतुलित करता है।

- अमावस्या को पितरों के निमित्त जल और तिल का अर्पण करना — चाहे घर में ही — पर्याप्त है; कोई बड़ी पूजा नहीं चाहिए।



किन बातों में झलक दिख सकती है

अ ध्या य 3

पितृ-ऋण बहुत गहरा और गूढ़ विषय है — पर इसका अर्थ यह नहीं कि आपके जीवन में कोई बड़ा संकट है। **आपकी कुंडली में दोष हल्का है, इसलिए इसकी झलक भी सूक्ष्म तरीकों से आती है** — बड़े-बड़े संकटों में नहीं, बल्कि रोजमर्रा की कुछ ऐसी परिस्थितियों में जिन्हें आपने शायद अब तक संयोग माना हो।

आत्मविश्वास और अपनी पहचान में उतार-चढ़ाव

आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में हैं और उनके साथ केतु की युति है। **सूर्य आत्मविश्वास, नेतृत्व और अपनी पहचान के कारक हैं** — और केतु उन्हें एक अजीब-सी अनिश्चितता में डालता है। इसका अर्थ यह है कि कभी-कभी — बिना किसी ठोस कारण के — आपको लग सकता है कि आप जितना कर सकते थे, उतना नहीं कर पाए। किसी काम में सफलता मिले तो भी मन पूरी तरह संतुष्ट नहीं होता। लोग तारीफ़ करें, पर भीतर कहीं एक सवाल रहता है — "क्या यह काफ़ी है?"

यह कोई कमजोरी नहीं है। यह केतु का स्वभाव है — वह सूर्य की आत्म-प्रकाश की क्षमता को थोड़ा धुंधला कर देता है।

पिता या पिता-तुल्य व्यक्तियों से सम्बंध में एक सूक्ष्म दूरी

सूर्य-केतु की यह युति नवम भाव (जो पिता का भाव है) से नहीं है, पर **सूर्य पिता के नैसर्गिक कारक हैं** — इसलिए इनकी पीड़ा का असर पितृ-सम्बंध पर भी पड़ता है। यह झलक इस रूप में आ सकती है:

- पिता से या किसी बड़े अधिकारी से मन की बात कहने में हिचकिचाहट
- यह भाव कि "जो मैं चाहता था, वह पिता समझ नहीं पाए" या "मेरी अपेक्षाएँ पूरी नहीं हुईं"
- उम्र में बड़े लोगों का आशीर्वाद और मार्गदर्शन जीवन में कुछ देर से मिलना

यह कोई गहरा संघर्ष नहीं है — बस एक हल्की-सी खाई जो थोड़े प्रयास से पाटी जा सकती है।

लाभ और मेहनत का अनुपात कभी-कभी असंतुलित लगना

सूर्य-केतु एकादश भाव में हैं — **एकादश लाभ, इच्छापूर्ति और नेटवर्क का भाव है।** यहाँ केतु की उपस्थिति का अर्थ है कि कभी-कभी आप बहुत मेहनत करते हैं, नेटवर्क भी अच्छा होता है, पर लाभ उस अनुपात में नहीं आता जितना आना चाहिए था। या फिर लाभ आता है पर उसे सँभाल पाना कठिन लगता है।

यह एकादश के शोधित अष्टकवर्ग बिंदु (केवल 3) से भी सिद्ध होता है — **यह भाव कमज़ोर है, यहाँ अधिक प्रयास से फल मिलता है।**

मुख्य बातें

- **आत्मविश्वास में सूक्ष्म कमी** — सफलता के बावजूद भीतरी संतोष न मिलना; यह सूर्य-केतु की युति का प्रत्यक्ष असर है
- **पिता या बड़ों से भावनात्मक संवाद में हल्की रुकावट** — यह बड़ा दोष नहीं, पर ध्यान देने योग्य है
- **लाभ के भाव में केतु** — मेहनत और फल के बीच कभी-कभी असंतुलन; एकादश के कमज़ोर अष्टकवर्ग बिंदु इसकी पुष्टि करते हैं
- **ये झलकें जीवन की धारा को नहीं रोकतीं** — ये केवल संकेत हैं कि थोड़ी श्रद्धा और पितृ-कृतज्ञता का भाव जीवन को और हल्का बना सकता है
- **वेशी योग** (जो आपकी कुंडली में बना है) आपको स्वाभाविक रूप से सत्यनिष्ठ और परोपकारी बनाता है — यह पूर्वजों की असली विरासत है, उसे पहचानिए



पितृ पक्ष व अन्य महत्वपूर्ण समय

अ ध्या य 4

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में पितृ दोष का संकेत हल्का है — इसलिए इसे निभाने के लिए किसी बड़े अनुष्ठान की ज़रूरत नहीं, बस कुछ सही अवसर और सही भाव चाहिए। पितृ पक्ष वह समय है जब यह छोटा-सा ऋण सबसे सहज रूप से चुकाया जा सकता है।

पितृ पक्ष — इस वर्ष कब और कैसे

पितृ पक्ष भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक चलता है। इस वर्ष 2026 में यह लगभग सितम्बर के मध्य से अक्टूबर के पहले सप्ताह तक रहेगा। यह समय आपके लिए इसलिए भी विशेष है क्योंकि इन्हीं दिनों आपकी **सूर्य महादशा-शनि अंतर्दशा** चल रही है — और सूर्य ही पितृ कारक हैं। जन्म-कुंडली में सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति (मिथुन, भाव 11) जो हल्का संकेत देती है, उसे इस पितृ पक्ष में सादगी से शांत किया जा सकता है।

सूर्य महादशा में पितृ पक्ष का श्राद्ध करना विशेष फलदायी होता है — यह परंपरागत मान्यता है और आपकी दशा इससे मेल खाती है।

क्या करें इस पितृ पक्ष में

- किसी भी एक तिथि को — विशेषकर अमावस्या या अपने पितरों की मृत्यु-तिथि को — तिल, जल और कुश से साधारण तर्पण करें। घर पर भी हो सकता है, तीर्थ अनिवार्य नहीं।
- कौवे, गाय और कुत्ते को भोजन दें — यह सबसे सरल और परंपरागत उपाय है।
- घर के बड़े-बुजुर्गों — माता, पिता, दादा-दादी, नाना-नानी — जो भी जीवित हों, उनसे मिलें, बात करें, सेवा करें। यही सबसे बड़ा श्राद्ध है।
- ब्राह्मण-भोजन या किसी जरूरतमंद को भोजन देना भी इसी श्रेणी में आता है।

अमावस्या — पूरे वर्ष का सहज अवसर

पितृ पक्ष के अलावा, **हर मास की अमावस्या** पितरों के स्मरण का दिन है। आपकी कुंडली में सूर्य एकादश भाव में हैं — यह भाव बड़े स्वप्न और पूर्वजों से मिली विरासत का भी है। हर अमावस्या को सूर्योदय के समय एक लोटा जल सूर्य को अर्पित करें और पितरों का स्मरण करें — यह दस मिनट का काम आपकी सूर्य महादशा में भी उपयुक्त रहेगा।

फ़रवरी 2027 — एक महत्वपूर्ण मोड़

फ़रवरी 2027 में सूर्य-बुध अंतर्दशा आरंभ होगी (तब आप लगभग 35 वर्ष के होंगे)। बुध द्वादश भाव में हैं — यह भाव पितृ-ऋण, एकांत और मोक्ष का है। इस अंतर्दशा से पहले, यानी अभी के पितृ पक्ष में, यदि एक बार श्रद्धापूर्वक श्राद्ध कर लें, तो आगे का समय मन में हल्कापन लेकर आएगा। यह कोई भय नहीं — बस एक अच्छा अवसर है।

मुख्य बातें

- **पितृ पक्ष 2026** में एक बार साधारण तर्पण अवश्य करें — सूर्य महादशा में यह विशेष रूप से उपयुक्त है।
- **हर अमावस्या** को सूर्य को जल और पितरों का स्मरण — यह वर्षभर का सरल क्रम बनाइए।
- जीवित बड़ों की सेवा ही सबसे बड़ा पितृ-यज्ञ है — इसे जीवनशैली का हिस्सा बनाएँ।
- **फ़रवरी 2027** से पहले यह श्रद्धा-कार्य पूरा कर लेना मन को हल्का रखेगा।
- कोई महँगी पूजा या लंबी यात्रा अनिवार्य नहीं — **भाव सच्चा हो, यही सब कुछ है।**



निवारण — तर्पण, दान व सेवा

अ ध्या य 5

निवारण — तर्पण, दान व सेवा

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में पितृ दोष का संकेत हल्का है — केवल एक, और वह भी ग्यारहवें भाव में, जहाँ सूर्य के साथ केतु की युति है। इसका अर्थ यह है कि **निवारण के लिए न कोई बड़ा कर्मकांड चाहिए, न कोई विशेष तीर्थ अनिवार्य है** — एक सरल, नियमित श्रद्धा-भाव ही पर्याप्त है।

तर्पण — पूर्वजों को जल देने की परंपरा

ग्यारहवें भाव में सूर्य-केतु की युति यह संकेत देती है कि **लाभ व संबंधों के धरातल पर** पूर्वजों से जोड़ थोड़ा शिथिल है। इसे जोड़ने का सबसे सरल उपाय है — तर्पण।

- **अमावस्या के दिन** (हर माह) सूर्योदय के समय स्वच्छ जल में काले तिल मिलाकर पूर्वजों का स्मरण करते हुए अर्पित करें। यह कहीं बाहर जाने की ज़रूरत नहीं — घर में भी हो सकता है।
- **पितृ पक्ष में** (श्राद्ध पक्ष) सोलह दिनों में से कम से कम एक दिन — अधिमानतः अपने पितर की तिथि पर — यह करें। यदि तिथि ज्ञात न हो, तो अमावस्या का दिन सर्वमान्य है।
- सूर्य ग्यारहवें भाव में हैं और वेशी योग में बल पाते हैं — इसलिए **सूर्य को जल अर्पित करना** (ताँबे के पात्र से, सूर्योदय के आसपास) भी इस दोष के संदर्भ में विशेष उपयुक्त है।

दान — देने का भाव, दिखावे का नहीं

आपकी कुंडली में शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में हैं — यह दर्शाता है कि **सेवा और दान से आपका कर्म-ऋण सबसे सहजता से चुकता होता है**। पूर्वजों की स्मृति में दान का अर्थ केवल पैसे देना नहीं है — यह भाव की बात है।

- **गाय, कौवे और कुत्ते को भोजन** — यह परंपरा सबसे पुरानी है। पितृ पक्ष में विशेष, पर बाकी समय में भी सोमवार या अमावस्या को करना शुभ है।
- **ब्राह्मण भोजन** अथवा **किसी ज़रूरतमंद को भोजन** — बड़े आयोजन की आवश्यकता नहीं; एक व्यक्ति को प्रेम से खिलाना भी पर्याप्त है।
- **काले तिल, चावल, जल का दान** — अमावस्या या पितृ पक्ष में किसी भी मंदिर या पवित्र स्थान पर।
- सूर्य ग्यारहवें भाव (लाभ भाव) में हैं — इसलिए **किसी निःस्वार्थ कार्य में अपना समय व श्रम लगाना** भी दान का ही एक रूप है। यह सूर्य को प्रसन्न करने का सबसे सीधा मार्ग है।

सेवा — सबसे बड़ा और सबसे टिकाऊ उपाय

पितृ दोष का निवारण केवल कर्मकांड से नहीं, **जीवन में किए जाने वाले कार्यों से** होता है। आपकी कुंडली में गुरु लग्न में बैठे हैं और युवा

अवस्था में हैं — इसका अर्थ है कि **बड़ों की सेवा, गुरु का सम्मान और ज्ञान का वितरण** — ये तीनों आपके पूर्वजों को सबसे अधिक तृप्त करते हैं।

- **माता-पिता व घर के बड़े-बुजुर्गों के साथ समय** — उनकी बातें सुनना, उनकी देखभाल करना, उनसे आशीर्वाद लेना। यह 34 वर्ष की आयु में सबसे सुगम और सबसे प्रभावी उपाय है।

- **पीपल के वृक्ष को शनिवार के दिन जल** — शनि जब इस दोष के निवारण में सहायक हैं, तो यह भी उचित है।

- **गीता का एक अध्याय** — नित्य नहीं तो सप्ताह में एक बार, विशेषकर पितृ पक्ष में।

मुख्य बातें

- **तर्पण** — अमावस्या को जल व तिल से पूर्वजों का स्मरण; सूर्योदय पर ताँबे के पात्र से सूर्य को जल।

- **दान** — गाय-कौवे-कुत्ते को भोजन; किसी जरूरतमंद को भोजन या समय देना।

- **सेवा** — माता-पिता व बड़ों का आदर-सेवा ही इस कुंडली का सबसे बड़ा निवारण है।

- **कोई बड़ा खर्च या महँगी पूजा अनिवार्य नहीं** — दोष हल्का है, उपाय भी सरल हैं।

- यह ऋण दंड नहीं, **कृतज्ञता का आमंत्रण है** — जो आप श्रद्धा से निभाते हैं, वही पर्याप्त है।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४



संतुलित दृष्टि — पूर्वजों का आशीर्वाद

अ ध्या य 6

संतुलित दृष्टि — पूर्वजों का आशीर्वाद

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली जो सबसे बड़ी बात कह रही है वह यह है — **आपके पूर्वज आपके साथ हैं, विरुद्ध नहीं।** एकमात्र हल्का संकेत भी एक द्वार है, दंड नहीं।

पूर्वजों की पूँजी — जो साथ आई

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में अपनी ही राशि (मेष) में बैठे हैं — और नवम भाव भाग्य, धर्म व पूर्वजों की विरासत का घर है। **यह एक दुर्लभ स्थिति है।** इसका अर्थ है कि आपके पूर्वजों ने जो संघर्ष किया, जो मेहनत की, जो साहस दिखाया — उसका सार आपके भीतर उतरा है। आप 34 वर्ष की आयु में जो दृढ़ता और कर्मठता महसूस करते हैं, वह कहीं न कहीं उन्हीं की दी हुई पूँजी है।

इसके साथ गुरु लग्न (भाव 1) में मित्र राशि में युवा अवस्था में हैं — गजकेसरी योग भी बन रहा है। यह पूर्वजों का आशीर्वाद है कि **बुद्धि, विवेक और समाज में सम्मान** आपकी राह में बाधा नहीं, सहारा बनते हैं।

सूर्य-केतु — वह एक धागा जो ध्यान माँगता है

भाव 11 में सूर्य और केतु एक साथ हैं — यही वह हल्का संकेत है जो गणना में मिला। **सूर्य पिता के कारक हैं, और केतु एक प्रकार का अलगाव या दूरी का भाव लाता है।** इसका व्यावहारिक अर्थ यह हो सकता है कि पिता या पितृ-परंपरा से कोई बात अनकही रह गई हो — कोई इच्छा, कोई आशा, कोई संवाद जो पूरा न हुआ हो।

पर यह दोष नहीं, एक संकेत है — **याद कीजिए और जोड़िए।**

आशीर्वाद लेने का सहज तरीका

आपकी कुंडली में शोधित अष्टकवर्ग के अनुसार नवम भाव के बिंदु 13 हैं — यह बल अच्छा है। इसका अर्थ है कि पूर्वजों से जुड़ाव का रास्ता आपके लिए **स्वाभाविक रूप से खुला** है, कठिन नहीं।

- **जो काम आपके पिता या दादा करना चाहते थे पर न कर सके** — उसमें अपना थोड़ा-सा समय लगाइए। यही सबसे बड़ा तर्पण है।
- घर के बड़े-बुजुर्गों से बात करना, उनकी सुनना — यह केतु की उस दूरी को पाटता है जो सूर्य के साथ बनती है।
- सूर्य की ऊर्जा के साथ चलने के लिए — सुबह धूप में थोड़ा समय, रीढ़ सीधी, मन स्थिर।

मुख्य बातें

- **आपकी कुंडली में पूर्वजों की विरासत बल है, बोझ नहीं** — मंगल नवम में स्वराशि इसका प्रमाण है।
- गुरु लग्न में युवा अवस्था में हैं — यह आशीर्वाद का जीवित रूप है।
- सूर्य-केतु का संकेत किसी अनकही बात की ओर इशारा करता है — **उसे कर्म से पूरा कीजिए।**
- नवम भाव का अष्टकवर्ग बल (13 बिंदु) बताता है कि पितृ-कृपा का मार्ग सहज है।
- **पूर्वजों को याद करना दायित्व नहीं, शक्ति लेना है** — इसी भाव से आगे बढ़िए।

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ पितृ दोष व निवारण ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।